International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

vkyfEi;u] vtqu vkokMh egku eDdckt eukt dekj ,d 0;fDrxr v/;;u

रविन्द्र कुमार, शौद्यार्थी वनस्थली विद्यापीठ, जयपुर

डॉ॰ प्रहलाद शर्मा, सहायक प्रोफेसर, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक, राजस्थान

आज मैं जिस खिलाड़ी के विषय में आपको बताना चाहता हूँ वो खिलाड़ी अपने ही खेल जगत में एक महान मुकाम हासिल कर चुका है। आज वह किसी पहचान का मोहताज नहीं है। यह खिलाड़ी बॉक्सिंग खेल से संबंध रखता है। बॉक्सिंग उसका जनून है। जिन्होंने भारत के लिए वर्ष 2010 में राष्ट्रमण्डल खेलों में स्वर्ण पदक प्राप्त किया जो नई दिल्ली, भारत में हुए थे। इस महान खिलाड़ी का नाम 'मनोज कुमार' है। जो बड़ी ईमानदारी व कठिन परिश्रम से देश के लिए पदक लाने के लिए जी–जान लगा रहा है। इन्होंने अपने जीवन में संघर्ष के बल पर अपने आप को साबित किया है और बॉक्सिंग के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है। आजकल खेलें व स्पोर्टस विश्व संस्कृति बन गई है। खेल व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावात्मक रूप से मजबूत बनाता है। समाज व राष्ट्र के निर्माण में खेलों का बहुत महत्व है। खेलों के द्वारा खिलाड़ी अपने माता–पिता, देश, गाँव का नाम रोशन करता है। खेलों के द्वारा खिलाड़ी में अपने देश के प्रति सद्भावना और अपना सबकुछ दांव पर लगाने की भावना उत्पन्न होती है।[1]

मुक्केबाजी एक मार्शल कला है। जिसमें दो लोग अपनी मुट्ठियों (Fists)का प्रयोग करके लड़ते हैं और अपनी मुट्ठियों पर मुक्केबाजी दस्ताने पहने होते हैं। मुक्केबाजी सबसे पहले यूनान में बीसी 668 में खेला गया था। इसका प्राचीन नाम पुगलिज्म है। भारत में सबसे पहले मुम्बई में

[1]अजीमउद्दीन अंसारी, "अर्जुन पुरस्कार प्राप्त जफर इकबाल हॉकी खिलाड़ी एक व्यक्तिगत अध्ययन" प्रकाशित पी०एच०डी० शोध प्रबन्ध देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, 2014.

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

खेला गया था 1925 ई0 में 'बोम्बे प्रेसिडेन्सी एमेच्योर मुक्केबाजी फैडरेशन' को बनाया गया जिसके द्वारा मुक्केबाजी प्रतियोगिता करवाई जाती थी। इसके बाद 1949 ई0 में 'भारतीय ऐमच्योर मुक्केबाजी फेडरेशन' बनाई गई जो सभी घरेलू व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में तालमेल बनाए रखती है जो ओलम्पिक, एशियन, राष्ट्रमण्डल खेलों में टीमों को भेजती है। मुक्केबाजी प्रतियोगिताा में एक रेफरी व तीन जज होते है। जो इस प्रतियोगिता में हार जीत को सुनिश्चित करते हैं। मुक्केबाजी का उद्देश्य अपने विरोधी को मुक्केबाजी तकनीक से पराजित करना है।[2]

मनोज कुमार का जन्म 10 दिसम्बर 1986 को हरियाणा प्रान्त के कैथल जिले राजौन्द गांव में एक सैनिक परिवार हुआ। मनोज कुमार का लालन पालन ग्रामीण अंचल का ही रहा है। मनोज कुमार के पिता सेना से सेवानिवृत है तथा माता गृहिणी है। मनोज कुमार चार बहन भाई हैं जिनमें मनोज कुमार तीसरे स्थान पर आते है। मनोज कुमार के प्रशिक्षक उनके बड़े भाई, राजेश कुमार जी हैं जो कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र में मुक्केबाजी कोच है। मनोज कुमार के दूसरे बड़े भाई का नाम मुकेश कुमार है जो मुक्केबाजी के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी है जो भारतीय रेलवे विभाग में सीनियर टिकट चैकर के पद पर कार्यरत है।11 साल की उम्र में मनोज ने मुक्केबाजी शुरु की और 3 महीने के अभ्यास से ही पहली हरियाणा स्टेट मुक्केबाजी प्रतियोगिता, जो पंचकुला में हुई, उसमें मनोज ने स्वर्ण पदक हासिल किया। 2004 में दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय मुक्केबाजी प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक हासिल किया। अब तक मनोज कुमार 42 से ज्यादा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं जीत चुका है। मनोज कुमार ने 2007 व 2013 में ऐशियाई खेलों में कांस्य पदक हासिल किया है।

मनोज कुमार का भार वर्ग लाईट वेल्टर 64 किग्रा है। मनोज कुमार ने 2012 लन्दन व 2016 रियो ब्राजील ओलम्पिक खेलों में भी शिरकत की है।

[2] http://hi.m.Wikipedia.Boxing

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

2010 के राष्ट्रमण्डल खेलों में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। जो भारत के दिल्ली शहर में हुए थे। अभी फिलहाल मनोज कुमार भारतीय रेल विभाग में मुख्य टिकट प्रशिक्षक के पद पर कार्यरत है।[3]

शोध कथन

प्रस्तावित शोध समस्या की नवीनता एवम महत्त्व को ध्यान में रखते हुए खिलाड़ियों एवं नए शोधार्थियों को ऐसे महान खिलाड़ी के व्यक्तिगत अध्ययन का जानकारी आवश्यक है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने निम्नांकित विषय को अपने अध्ययन को शोध क्षेत्र बनाया है "vkyfEi;u] vtqu vkokMh egku eDdckt eukt dqekj ,d 0;fDrxr v/;;u"।

1 अध्ययन का महत्व–

1 अध्ययन जूनियर मुक्केबाज शारीरिक शिक्षक व जूनियर खिलाड़ियों को प्रेरित करता है।

2 अध्ययन मे आहार सूची, प्रशिक्षण विधियों को समझाया जाएगा जो प्रत्येक प्रशिक्षक के लिए पूरी तरह मददगार है।

3 प्रस्तुत अध्ययन मनोज कुमार की उपलब्धियों के बारे में जानने में जानना है।

भाोध विधि

मेरे शोध का विषय " vkyfEi;u] vtqu vkokMh egku eDdckt eukt dqekj ,d 0;fDrxr v/;;u" एक सूक्ष्म स्तरीय प्रकृति का तथा मुख्य रूप से प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। जिसे शोध कर्ता द्वारा व्यक्गित सर्वेक्षण द्वारा एकत्रित किया है। इस शोध कार्य में

[3] http://hi.m.Wikipedia.org>Wiki>ManojKumar

शोधकर्ता द्वारा प्रसिद्ध मुक्केबाज मनोज कुमार के व्यक्तिगत व जीवन के बारे में सूचना एकत्रित करने के लिए एक प्रश्नावली द्वारा, मनोज कुमार स्वयं से, उनके मित्रगण, उनके शारीरिक प्रशिक्षक एवं उनके परिवार से व्यक्तिगत साक्षात्कार द्वारा आंकड़ों का संकलन किया है।

शोधकर्ता द्वारा इस शोध में आंकडों का संकलन प्राथमिक व द्वितीय दोनों प्रकार के स्त्रोतों से किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों के लिए प्रश्नावली के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है। जिसमें शोधकर्ता द्वारा व्यक्तिगत साक्षात्कार के लिए स्वयं मनोज कुमार, उसके शारीरिक प्रशिक्षक, उनके परिवार के सदस्यों एवं मित्रगणों से सम्पर्क किया गया है। शोध अध्ययन को व्यवहारिक एवं सैद्धान्तिक पक्षों का विवेचन करने के लिए द्वितीयक स्त्रोतों से सूचनाएं एकत्रित किया गया है। इन द्वितीयक स्त्रोतों में शोधार्थी द्वारा समाचार पत्रों की कटिंग, उनको राष्ट्रीय स्तर एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त पुरस्कारों की सूचनाओं को शामिल किया गया है।

पुरस्कार व सम्मान– भारत में मनोज कुमार को मुक्केबाजी के क्षेत्र में 2014 को अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मनोज कुमार भारतीय रेलवे में मुख्य टिकट प्रशिक्षक के पद पर है।

मनोज कुमार को खेलों में आगे बढ़ाने में उनके बड़े भाई व कोच राजेश कुमार का बहुत बड़ा योगदान है।

उपलब्धियाँ–

- ❖ 2 बार ओलम्पिक भागीदार (लन्दन ओलम्पिक, 2012, रियो ओलम्पिक, 2016)
- ❖ स्वर्ण पदक राष्ट्रमण्डल खेल, 2010

- ❖ स्वर्ण पदक, दक्षिण एशियाई खेल, 2016
- ❖ स्वर्ण पदक, दोहा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता, 2015
- ❖ स्वर्ण पदक, वाई०एम०सी०ए० अन्तर्राष्ट्रीय मुक्केबाजी प्रतियोगिता, 2004
- ❖ स्वर्ण पदक, वाई०एम०सी०ए० अन्तर्राष्ट्रीय मुक्केबाजी प्रतियोगिता, 2007
- ❖ रजत पदक, वाई०एम०सी०ए० अन्तर्राष्ट्रीय मुक्केबाजी प्रतियोगिता, 2003
- ❖ रजत पदक, एफ०एक्स०टी०एम० लिम्मासोल मुक्केबाजी कप, 2013
- ❖ रजत पदक, बाक्साई मुक्केबाजी कप, 2013
- ❖ कास्य पदक, विश्व ओलम्पिक कवालिफाई प्रतियोगिता, 2016
- ❖ कास्य पदक, प्री ओलम्पिक कवालिफाई, 2016
- ❖ कास्य पदक, एशियाई खेल, 2007
- ❖ कास्य पदक, एशियाई खेल, 2013
- ❖ कास्य पदक, 16वीं ए०के० मिश्रा, अन्तर्राष्ट्रीय मुक्केबाजी प्रतियोगिता, 2009
- ❖ स्वर्ण पदक, राष्ट्रीय मुक्केबाजी प्रतियोगिता, गोवाहटी, 2016
- ❖ स्वर्ण पदक, राष्ट्रीय मुक्केबाजी प्रतियोगिता, 2017

निश्कर्श–

मैं चाहता हूँ कि महान मुक्केबाज मनोज कुमार की पारिवारिक पृष्ठभूमि, व्यक्तिगत जीवन और उसकी उपलब्धियों को सभी जान सकें और उनके जीवन से जूनियर खिलाड़ियों को प्रेरणा

मिल सकें और मुक्केबाजी में कठिन परिश्रम करके देश के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक ला सकें और अपने माता–पिता व देश का नाम ऊँचा कर सकें।

संदर्भ ग्रन्थ–

1 Azim Uddin Ansari,2014, Arjuna Awardee Zafar Iqbal Legendary hockey player: a case study unpublished Ph.D Devi Ahilaya Vishawavidhalay Indor.

2 https://hi.m.Wikipedia.Boxing

3 http://hi.m.Wikipedia.org>Wiki>ManojKumar

4 एन०के० सिंह "बॉक्सिंग के नियम एवं निपुणता" प्रकाशक खेल साहित्य केन्द्र, नई दिल्ली, 2013

5 साक्षी रानी, "कर्णम मल्लेश्वरी का जीवन परिचय व उपलब्धिया" परोसीडिंग नेशनल कान्फ्रेंस, फिजिकल एजुकेशन, ISBN 978-81-927686-5-6